

भाव चित्रावली

श्रीधरिन्द्रनाथ गंगोपाध्याय

Copyright strictly reserved by the Author

मूल्य ४) राजस्वस्करण ६)

प्रकाशक •

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,
१२६, हरिजन रोड, कलकत्ता

प्रकाशक—

महावीरप्रसाद पोद्दार

स्थापक—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता

से बंगला और अंगरेजी संस्करण
भी मिलते हैं ।

बंगला और अंगरेजी संस्करणोंके

प्रकाशक—

आनन्दभण्डार पब्लिशिंग हाउस

२७, सुकिया स्ट्रीट

यहां हिन्दी संस्करण भी
मिलता है ।

मोटर—



चित्र—

श्री० राय प्रसाद सक्सेना

वक्तव्य



इस पुस्तकके कुछ चित्र पहले पहल बङ्गभाषाके सुप्रसिद्ध मासिक पत्र “भारतदर्प”में प्रकाशित हुए थे। लोगोंने उन्हें खूब पसन्द किया, चारों ओरसे प्राप्त हुए हम लगा कि ये चित्र पुस्तकाकार निकलने चाहिए। आनन्द भण्डारने इस कार्य भारको सानन्द ग्रहण किया। भाषे अभिव्यक्तिके नामसे बङ्गला और Expressions & Caricatures के नामसे अंग्रेजी मस्करण प्रकाशित किया। आनन्द भण्डारने उन दोनों मस्करणोंको सर्वांग सुन्दर बनानेमें जो परिश्रम और चेष्टा का है उसके लिये वह मेरे हार्दिक धन्यवादका पात्र है।

आनन्दकी बात है कि बङ्गसमाज तथा अंग्रेज जनताने पुस्तकोंका आशातीत आदर किया। बंद बड़े विद्वानोंने उनकी सराहना की, अंग्रेजी तथा बङ्ग-भाषाके नामी नामी पत्रोंने अपने कालमें प्रशंसापूर्ण लेख लिखे।

हमलोग राष्ट्रभाषा हिंदीमें भी एक मस्करण निकालना चाहते थे। इसी समय कलकत्तेके सुविन्याय प्रकाशक “हिन्दी पुस्तक एजेंसी” तथा “गिरिप्रेम”के सञ्चालक श्रीयुक्त महावीरप्रसाद पोद्दारसे भट हुई। उन्होंने इसे हिंदीमें प्रकाशित करनेकी अभिलाषा प्रकट की। उनका उत्साह देखकर आनन्द भण्डारने इसके हिन्दी सम्स्करण प्रकाशनका अधिकार उहे प्रदान किया। आशा है, हिन्दी प्रेमियोंका इसमें निगम मनोरञ्जन होगा। दूसरा भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है। मित्रों सम्मति है कि हिन्दी जनताके खाम खाम भाव तथा रीति रियाज लेकर भी कुछ भाव व्यक्त किए जायें। मैं आशा पानकी चष्ट करूँगा।

धीरेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय

भूमिका



सौभाग्यवश आज मुझे अपने प्रिय मित्र श्रीयुक्त गिरिन्द्रनाथ गगोपाध्यायने हिं दी सत्सार्को परिचित करानेका प्रसन्न मिला है । भाग्य प्रदर्शनकी कलाम आपने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की है । आपने भागचित्रें बड़े चावसे देख जाते हैं, उनकी बहुत प्रशंसा हो चुकी है । सचमुच इस नियममें धीरेन्द्र बाबू अद्वितीय हैं । दर्शक इस भागचित्रालीमें देखेंगे कि एक ही धीरेन्द्र बाबूने कितनी भूमिकाएँ ग्रहण की हैं और किस सफलताके साथ । प्रच्छेद अच्छे समझदार बोला गया जाते हैं, दातो तले अंगुली दबा लेते हैं, आश्चर्यमें कहते हैं, ऐ ! सच चित्रोंमें एक ही आदर्श है । जी हा, एक हा, तब एक ही है मायाके पटलमें अनेक रूप देख पड़ता है, एक ही सुगन्धसे भिन्न भिन्न प्रकारके आभूषण उने हैं, भगवान एक ही, अवतार भिन्न भिन्न हैं ।

धीरेन्द्र बाबूमें यह शक्ति स्वाभाविक—ईश्वरदत्त है । आजकी नहीं—अनेक दिनकी बात है, हम दोनों मित्र कलकत्ता गगनमन्द-आर्टि-स्कूलमें चित्रकलाका प्रयत्न करते थे । उस समय धीरेन्द्र बाबूमें इन भावोंका विकास हो रहा था । आप तरह तरहकी सूत्रें बदलकर भाग दिखाकर हमलागोको हँसाते हँसाते लोटा देते थे । आज उसी मित्रने इस कलाम ऐसी निपुणता और प्रसिद्धि प्राप्त कर ला, अपनी कलाके “उस्ताद” माने जाने लगे, हमका मुझे आनन्दपूर्ण गर्व है ।

इन चित्रोंम प्रायः स्वाभाविकता भीमाका पहुँच गयी है। और पत्र पत्रपर कहता है, "एकौह बहुर्यामि" "एकौह बहुग्यामि"। दर्शक मोहित होकर प्राश्न्यमे न्यवेन लगता है। इसमेंके अनेक चित्र उपदेशप्रद हैं, उनसे सुख और शुद्ध आनन्द दोनों प्राप्त होते हैं। अधिकांश चित्र दर्शकोका मनोरञ्जन करेंगे इसमें सन्देह नहीं। भाषामे अवभिज्ञ जनता—अशि क्षित, बच्च, स्त्रिया आदि कनि और लैवकके उच्च भावोंको ग्रहण नहीं कर सकते, पर चित्रोंसे उनका भी मनोरञ्जन होता है और शिक्षा मिलती है। पढ़े लिखे लोग भी किमी पत्र या पुस्तकको उठाकर पहले उसके चित्र ही देखते हैं। यह प्रवृत्ति स्वाभाविक है। इसलिए मनोरञ्जन और शिक्षा कार्यम भी चित्रोंका बहुत कुछ सहायता आवश्यक है।

धारन्त्र मात्र बह्वसमाजके रत्न हैं इसलिये कई भाग उसी समाजकी दृष्टिसे उपस्थित किये गये हैं। फिर भी अधिकांश चित्र हम सब लोगोंके लिये समान भावसे उपयोगी हैं।

दर्शक चित्र देखनेके लिये छुटपटा रहे होंग इसलिये यह भूमिका यही समान।

रामेश्वरप्रसाद वर्मा

प्रकाशकका निवेदन



श्रायुक्त श्रीरेन्द्र नाथ गगोपाध्याय और आनन्द भण्डार पब्लिशिंग हाउसके हम अनन्त कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस पुस्तकके हिन्दी संस्करण प्रकाशनका अधिकार हिन्दी पुस्तक एजेन्सीको सानन्द प्रदान कर कृतार्थ किया । साथ ही हम यू० राय एण्ड सन्सके स्थाधिकारी अपन हितैषी मित्र श्रायुक्त सुमित्रराय चौधरी महाशयके भी कृतज्ञ हैं । उन्होंने इस पुस्तकके हिन्दी संस्करण प्रकाशनका भार हमें दिलानेमें विशेष चेष्टा की है ।

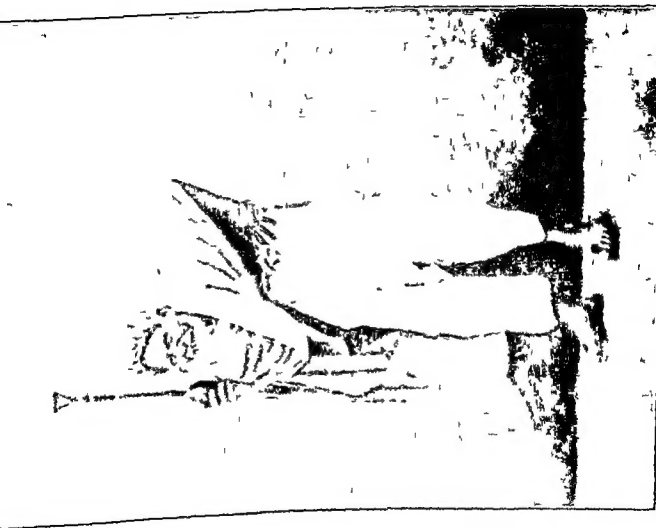
हम विश्वास हैं कि अपने इन मित्रोंकी कृपासे हिन्दी पुस्तक एजेन्सी भविष्यमें अनेक सचिव पुस्तकें हिन्दी पाठकोंका भेट कर सकेगा ।

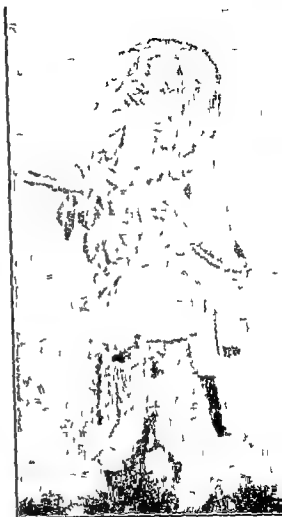
चिन्ता—

प्रकाशक



ANURCHAND BHAIRODAN SETHIA.
JAIN LIBRARY:
NER, RAIPUR.



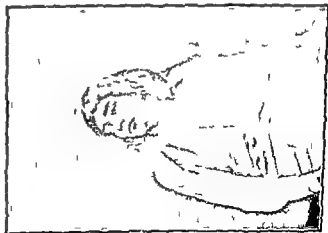
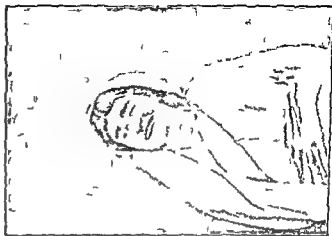
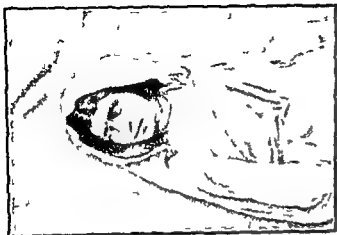


स्मात्तु तस्मात्

स्मात्तु

स्मात्तु

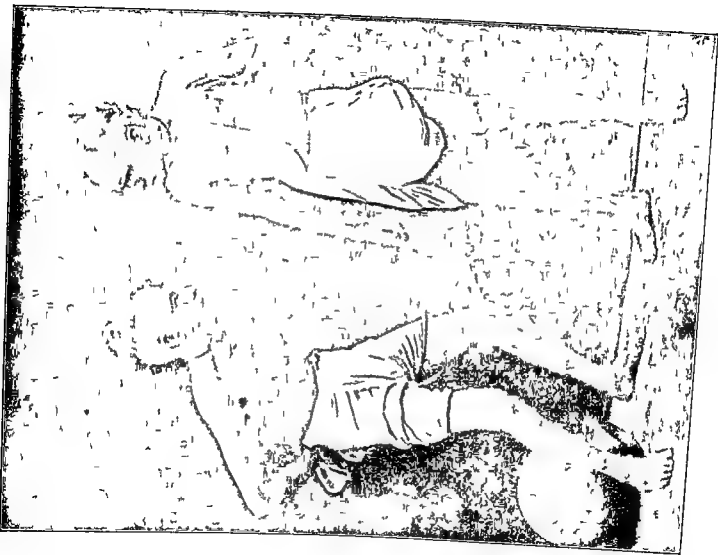
स्मात्तु



गङ्गा किङ्गडोड

[illegible]

ਮਾਧਨ ਸੀਕੀ ਗਿਅ, ਮਾਧਨ ਹੋਇ ਗਾਏ । ਲਾਖ-ਲਾਖ
 (ਮਾਧਨ ਦੇ ਬਾਰੇ ਕੁਝ ਜ਼ੋਰੀਆਂ ਨਾਲ ਗਾਏ ਕਿ ਮਾਧਨ) ਫੜੀ



नाइ किशिक

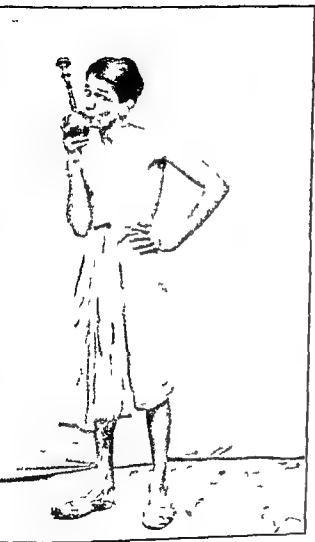
नाइ किशिक

नाइ किशिक नाइ किशिक



—

—



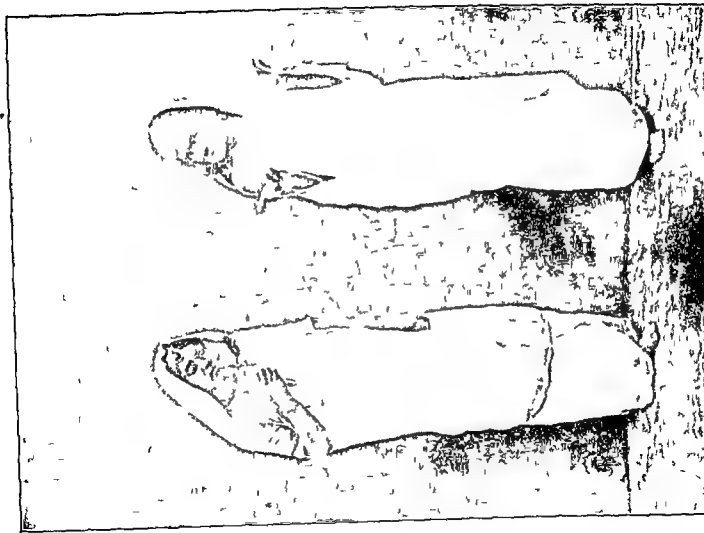
$$\frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$$

$$\frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$$











महर्षिगिरिधर प्रकाश

हनिप्रभु



नामी नाम केंद्र

एक नाम किरीट नम गयी केंद्रमि उम—नाम

। गयी नाम नममी

व मिमिह नि नाम नम । एतु गमि छिन्न—नामी

। मिहि वमाम नाम

(/ , ' -



आपनी आत्मा की ओर

१. आपकी आत्मा की ओर ध्यान करने का मत—
२. इस बात का अर्थ—आपकी आत्मा । आत्मा आत्मिक वि
३. विवेक व आत्मा आपकी आत्मा की ओर



निर्वाह

इन्की निपटक



ਪ੍ਰੀਤ ਪ੍ਰਭਾਤ

ਭਗੀਸ਼ੀਲ ਚੜੀਕੁ

ਸਮਾਭ ਚੜੀਕੁ

ਪ੍ਰੀਤ ਪ੍ਰਭਾਤ



॥॥ गीतार ॥॥



ਅਵਤਾਰ ਲਖਿਆਈ

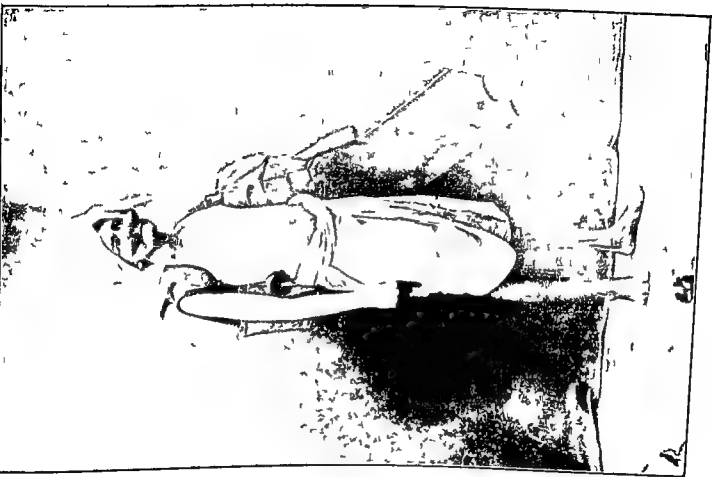
ਏ ਸੀਤ ਸਾਨ ਨਿ ਰੂਪਕ

ਅਵਤਾਰ ਛਤ

ਅਵਤਾਰ ਛਿਨ ਭਾਸੇ ਸੇ



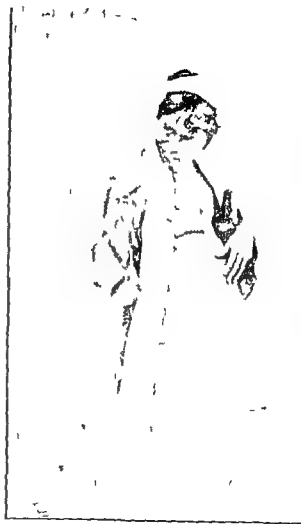
जिम्मा लागेको



विमल

१० विमल विमल विमल विमल

१० विमल



विषय

विषय विषय विषय

विषय विषय विषय विषय विषय





काष्ठ पत्र

काष्ठ



ਅਧਿਕਾਰੀ

ਅਧਿਕਾਰੀ

ਅਧਿਕਾਰੀ



सिक सिपुत

इहालकभुं गोरु पापु



ਮਾਸਕੁ ਭਾਸੁ

ਮਾਸੁ



विज्ञान जामाह

१. ! हँ हा लामो) म लाम

(हँ हल्ल) मिलाभुल्ल



ਨਿਰਮਲ ਨਾਮ

ਨਾਮਲ ਕੀਰਤੀਨਾ ਪਦੀ ਕੀਰਤੀਨੀ , " * * * — ਨਿ
 ਨਾਮੁ ਕਿਸ ਲਾਮਲ ਨਾਮਲਿ ਨਹਿ ਮਿਲੀ ' ਤਿਨਿ ਸੰਤ ਨਾਮੁ
 ---ਨਿਰਮਲ ਨਾਮਲੀ ਸੋ ਮਾਮਲ ਲਏ ਨਿਨ ਭ

। ਸੰਤਿਨਾਮ ਨਿਰਮਲੀ ਸੀ-ਨਾਮਲ ਸਿਰੀਨੀਨਿ ਨਿਰਮਲ-ਨੀਮ
 ' ਨਾਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮਲੀਨਾਮਲ ਨਾਮਲ



प्राप्त लक्ष्यां

ज. म. म. ३ कि. म. १०० १०० १०० १०० १००
' कि. म. ३ कि. म. ३ कि. म. ३

प्राप्त म. म.

' म. म. १०० १०० १०० १०० १००



तमसः क्रमः

॥ ९ ॥ तमः क्रमः क्रमः क्रमः

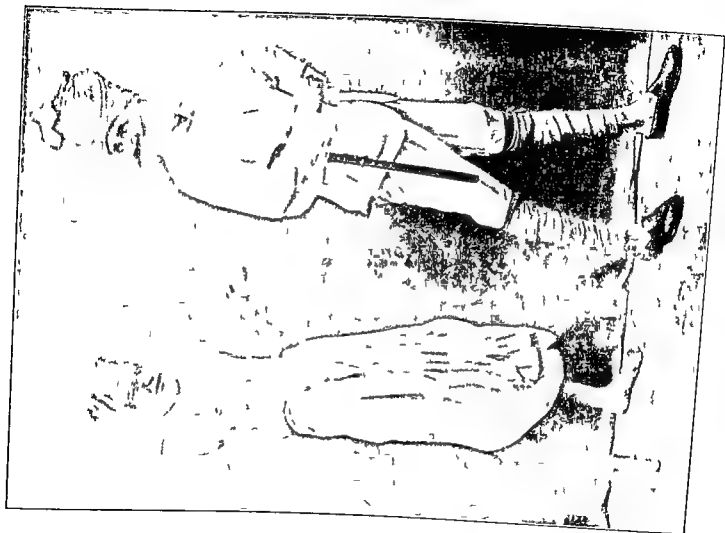
तमसः क्रमः

॥ ९ ॥ तमः क्रमः क्रमः क्रमः



ਆਰੰ ਭਿ ਆਰੰ

ਸਿੰਘਾਂ ਦੀ ਆਰੰ ਭਿ ਆਰੰ ਭਿ ਆਰੰ ਭਿ ਆਰੰ ਭਿ
'ੳੳੳੳ ਭਿ ਭਿ ਭਿ ਭਿ ਭਿ

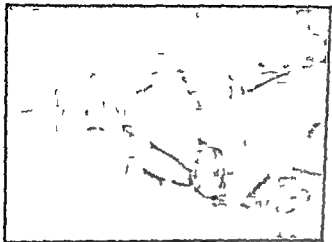


स्मृत

भाग

उत्तराखण्ड

विभाग



ਜ਼ਿਨਾਤ ਭਾਧ

(ਸਭ ਪਦ੍ਯ)

ਸਿਧਾਸ ਪਾਠਿ ਸਿ

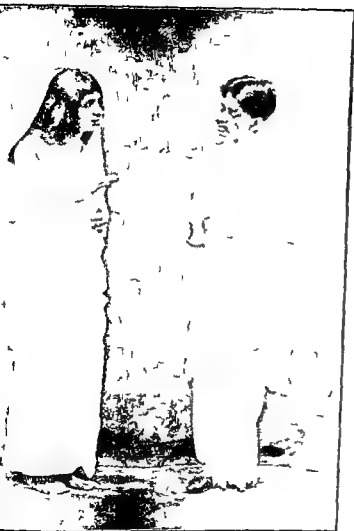
ਭਾਸਕਾ ਜਿਹ ਪਿਸਾ ਮਸ਼ਹੂਰ ਪਿਸ਼—ਸਿਧਾਸ
ਜਿਸੇ ਸਿਧਾਸ ਭਿਯਾਣ ਭਾ ' ਸਿਧਿਯੋ ਪਾਠੀ ਸਭ ਸਾਧ
ਜਿਸੇ ਜਿਯੋ ਜਿ ੧੧੧ ਪਦ੍ਯ ਜਿਯੋ ਜਿ ਜਿਯੋ ਭੁਯ
ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ' ਜਿ ਜਿਯੋ ਜਿ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ
' ' ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿ

ਕੀਮਤਾਸ

(ਸਭ ਪਦ੍ਯ)

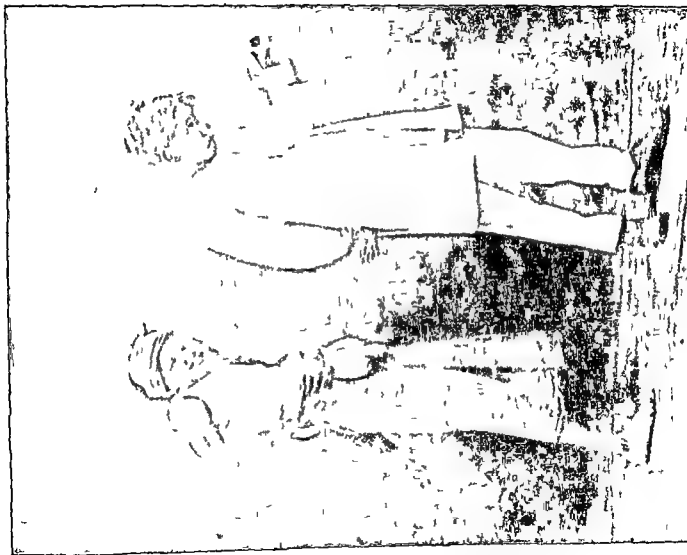
ਸਭ ਸਾਧਿ ਜਿਯੋ

ਭਾਸਕਾ ਜਿਯੋ ਕੀਮਤਿ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ' ਜਿਯੋ—ਸਭ
' ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ
ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ—ਜਿਯੋ
' ' ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ





लिफ्फा हि मोहना हि हि



निम्नलिखित

ज्ञानि ज्ञा



ਸਿਫਤੀਫ਼ ਕਿਰਾਮਤ ਏ

ਯਸ ਨੀਲਾ



ਜਿਗਰੀ

ਜਿਸਨੂੰ ਭਿਲ ਜਿ ਚਿਐ ' ਭਿਲ ਜਿ ਭਿਲ ਭਲੁ ' ਭਲੁ ਭਲੁ
ਭਲਾਭੁ ਭਿਲ ਜਿ ਭਿਲਾਭੁ ਜਿ ' ਭਲਾਭੁ ਭਲੁ ਭਲੁ ਭਿਲ ਭਿਲਾਭੁ
ਭਿਲਾਭੁ ਭਲੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲੁ ' ਭਿਲਾਭੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲੁ
" ਭਿਲਾਭੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲਾਭੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲੁ ਭਿਲੁ—ਭਿ



नाझाझर सर

इपानिम लताडि



कर्मोद्धार नाम्ने



मिडुं

(मीमांसा) . गुरु

गुरु

(मीमांसा) : ४



हाफ़्त प्रसंगि

• अतु हाफ़्त



विनाश

विनाश विनाश विनाश विनाश



॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ਸਾਗਰ ਸ੍ਰੀ

ਸਾਗਰ ਸ੍ਰੀ । ਸਿਰ ਹਰ ਤੇਰੇ ਮੇਰੇ ਲੋਕ ਸਿਰਾ
। ਸਿਰ ਹਰ ਤੇਰੇ ਲੋਕ ਸਿਰਾ

ਸਾਗਰ ਸ੍ਰੀ । ਸਿਰ ਹਰ ਤੇਰੇ ਮੇਰੇ ਲੋਕ ਸਿਰਾ
ਸਾਗਰ ਸ੍ਰੀ । ਸਿਰ ਹਰ ਤੇਰੇ ਮੇਰੇ ਲੋਕ ਸਿਰਾ
। ਸਿਰ ਹਰ ਤੇਰੇ ਮੇਰੇ ਲੋਕ ਸਿਰਾ





